मधुबन ओम् शान्ति अंक 344 मार्च 2021

पत्र-पुष्प

"परमात्म प्यार में सदा लवलीन रहने के लिए विशेष प्रेरणायें (याद पत्र)"

(18-02-21)

परमप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा लवलीन स्थिति का अनुभव करते, परमात्म प्यार के आनंदमय झूले में झूलने वाली, सर्व प्राप्ति सम्पन्न, रूहानियत की खुशबू से भरपूर निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश-विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ शिव भोलानाथ बाप के अवतरण महोत्सव की सबको बहुत-बहुत हार्दिक बधाईयां।

बाद समाचार - आप सभी परमात्म प्यार की अनुभवी आत्मायें, उमंग-उत्साह के साथ शिव भोलानाथ बाप की जयन्ती मनाते, हर स्थान पर शिवबाबा का प्यारा ध्वज फहरायेंगे और सभी को परमात्म अवतरण का शुभ सन्देश देते हुए बधाईयां देंगे। यह दिन तो दिलखुश मिठाई खाने और खिलाने का खुशियों भरा दिन है। यह बाप और हम बच्चों का अलौकिक हीरे तुल्य जन्म दिन, सभी ब्रह्मा वत्सों में एक नया उमंग, नया उत्साह भर देता है। इस कोरोनाकाल में आप सभी अपने-अपने क्षेत्र के वायुमण्डल प्रमाण सेवाओं की धूम तो मचायेंगे ही।

अभी तो हम सभी का यही एक लक्ष्य है कि विश्व रक्षक, सर्व के गति सद्गति दाता बीजरूप बाप को हर एक पहचानकर उनसे अपना जन्म सिद्ध अधिकार, वर्सा और वरदान प्राप्त कर ले। कोई भी आत्मा परमात्म सन्देश से वंचित न रह जाए, उसके लिए जरूर सभी ने कोई नवीनता सम्पन्न कार्यक्रम बनाये होंगे। मधुबन से भी इस 85 वीं त्रिमूर्ति शिवजयन्ती निमित्त कुछ सुझाव आपके पास भेजे जा रहे हैं, जो आप सहज कर सकते हैं, वह अवश्य करें। सेवाओं के साथ-साथ समय प्रमाण बापदादा का विशेष यही इशारा है कि **मेरे बच्चे अब सर्व खजानों से सम्पन्न बन, सन्तुष्टता का वायुमण्डल बनायें। अपने योगयुक्त तपस्वी जीवन द्वारा साक्षात्कार मूर्त बनें।** हर एक की ऐसी आन्तरिक लवलीन स्थिति हो जो एक एक से बाप का दर्शन होने लगे। यह साकारी रूप गुम हो जाए और निराकार बाप का अनुभव होने लगे। ऐसी स्थिति बनाने के लिए सभी स्थानों पर निरन्तर योग के कार्यक्रम चलते रहें। यह पूरा ही वर्ष हम सभी मिलकर ऐसी विशेष तपस्या करें जो बाबा का हर स्थान ''शान्तिकुण्ड'' बन जाए। सभी अनुभव करें कि इस स्थान से शान्ति की किरणें निकलकर चारों ओर फैल रही हैं।

इस महाशिवरात्रि के शुभ दिन पर प्यारे शिव भोलानाथ बाबा का झण्डा फहराते, झण्डे के साथ प्रतिज्ञा के रूप में कुछ दृढ़ संकल्प भी अवश्य करें जिससे अपनी ऊंचे से ऊंची स्थिति बनें, इसके लिए 5 शुभ संकल्प आपके पास भेज रहे हैं:-

1- किसी भी बात के विस्तार में न जाकर, विस्तार को बिन्दी लगाए बिन्दी में समा देंगे।

2- ''मैं पन'' की वृत्तियों का त्याग कर सदा परमात्म याद की लगन में मगन रहेंगे।

3- परमात्म प्यार में अपनी सर्व कमजोरियों को कुर्बान कर, असत्यता, अपवित्रता के प्रभाव को समाप्त करेंगे।

4- रूहानियत और शुभ भावना से सम्पन्न बन सर्व के स्नेही और सहयोगी बनेंगे।

5- श्रेष्ठ स्वमान की स्मृति द्वारा देह अभिमान को समाप्त कर निर्मानचित्त बनेंगे, सबको सम्मान देंगे।

ऐसे शुभ संकल्प करते हुए सभी अपनी ऊंचे से ऊंची स्थिति बनाना जी।

इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ, सभी को बहुत-बहुत स्नेह भरी याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

मार्च 2021 - तपस्वी जीवन के लिए होमवर्क

(अ) परमात्म प्यार में सदा लवलीन रहो

1) परमात्म प्यार आनंदमय झूला है, इस सुखदाई झूले में झूलते सदा परमात्म प्यार में लवलीन रहो तो कभी कोई परिस्थिति वा माया की हलचल आ नहीं सकती।

2) परमात्म-प्यार अखुट है, अटल है, इतना है जो सर्व को प्राप्त हो सकता है। लेकिन परमात्म-प्यार प्राप्त करने की विधि है – न्यारा बनना। जितना न्यारा बनेंगे उतना परमात्म प्यार का अधिकार प्राप्त होगा।

3) परमात्म प्यार में ऐसे समाये रहो जो कभी हद का प्रभाव अपनी ओर आकर्षित न कर सके। सदा बेहद की प्राप्तियों में मगन रहो जिससे रूहानियत की खुशबू वातावरण में फैल जाए।

4) बाप का बच्चों से इतना प्यार है जो रोज़ प्यार का रेसपान्ड देने के लिए इतना बड़ा पत्र लिखते हैं। यादप्यार देते हैं और साथी बन सदा साथ निभाते हैं, तो इस प्यार में अपनी सब कमजोरियां कुर्बान कर दो।

5) बच्चों से बाप का प्यार है इसलिए सदा कहते हैं बच्चे जो हो, जैसे हो–मेरे हो। ऐसे आप भी सदा प्यार में लवलीन रहो, दिल से कहो बाबा जो हो वह सब आप ही हो। कभी असत्य के राज्य के प्रभाव में नहीं आओ।

6) जो प्यारा होता है, उसे याद किया नहीं जाता, उसकी याद स्वत: आती है। सिर्फ प्यार दिल का हो, सच्चा और नि:स्वार्थ हो। जब कहते हो मेरा बाबा, प्यारा बाबा – तो प्यारे को कभी भूल नहीं सकते। और नि:स्वार्थ प्यार सिवाए बाप के किसी आत्मा से मिल नहीं सकता इसलिए कभी मतलब से याद नहीं करो, नि:स्वार्थ प्यार में लवलीन रहो।

7) परमात्म-प्यार के अनुभवी बनो तो इसी अनुभव से सहजयोगी बन उड़ते रहेंगे। परमात्म-प्यार उड़ाने का साधन है। उड़ने वाले कभी धरनी की आकर्षण में आ नहीं सकते। माया का कितना भी आकर्षित रूप हो लेकिन वह आकर्षण उड़ती कला वालों के पास पहुँच नहीं सकती।

8) यह परमात्म प्यार की डोर दूर-दूर से खींच कर ले आती है। यह ऐसा सुखदाई प्यार है जो इस प्यार में एक सेकण्ड भी खो जाओ तो अनेक दु:ख भूल जायेंगे और सदा के लिए सुख के झूले में झूलने लगेंगे।

9) जीवन में जो चाहिए अगर वह कोई दे देता है तो यही प्यार की निशानी होती है। तो बाप का आप बच्चों से इतना प्यार है जो जीवन के सुख-शान्ति की सब कामनायें पूर्ण कर देते हैं। बाप सुख ही नहीं देते लेकिन सुख के भण्डार का मालिक बना देते हैं। साथ-साथ श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींचने का कलम भी देते हैं, जितना चाहे उतना भाग्य बना सकते हो – यही परमात्म प्यार है।

10) जो बच्चे परमात्म प्यार में सदा लवलीन, खोये हुए रहते हैं उनकी झलक और फ़लक, अनुभूति की किरणें इतनी शक्तिशाली होती हैं जो कोई भी समस्या समीप आना तो दूर लेकिन आंख उठाकर भी नहीं देख सकती। उन्हें कभी भी किसी भी प्रकार की मेहनत हो नहीं सकती ।

11) बाप का बच्चों से इतना प्यार है जो अमृतवेले से ही बच्चों की पालना करते हैं। दिन का आरम्भ ही कितना श्रेष्ठ होता है! स्वयं भगवान मिलन मनाने के लिये बुलाते हैं, रुहरिहान करते हैं, शक्तियाँ भरते हैं! बाप की मोहब्बत के गीत आपको उठाते हैं। कितना स्नेह से बुलाते हैं, उठाते हैं – मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे, आओ.....। तो इस प्यार की पालना का प्रैक्टिकल स्वरूप है 'सहज योगी जीवन'।

12) जिससे प्यार होता है, उसको जो अच्छा लगता है वही किया जाता है। तो बाप को बच्चों का अपसेट होना अच्छा नहीं लगता, इसलिए कभी भी यह नहीं कहो कि क्या करें, बात ही ऐसी थी इसलिए अपसेट हो गये... अगर बात अपसेट की आती भी है तो आप अपसेट स्थिति में नहीं आओ।

13) बापदादा का बच्चों से इतना प्यार है जो समझते हैं हर एक बच्चा मेरे से भी आगे हो। दुनिया में भी जिससे ज्यादा प्यार होता

है उसे अपने से भी आगे बढ़ाते हैं। यही प्यार की निशानी है। तो बापदादा भी कहते हैं मेरे बच्चों में अब कोई भी कमी नहीं रहे, सब सम्पूर्ण, सम्पन्न और समान बन जायें।

14) आदिकाल, अमृतवेले अपने दिल में परमात्म प्यार को सम्पूर्ण रूप से धारण कर लो। अगर दिल में परमात्म प्यार, परमात्म शक्तियाँ, परमात्म ज्ञान फुल होगा तो कभी और किसी भी तरफ लगाव या स्नेह जा नहीं सकता।

15) बाप से सच्चा प्यार है तो प्यार की निशानी है–समान, कर्मातीत बनो। 'करावनहार' होकर कर्म करो, कराओ। कर्मेन्द्रियां आपसे नहीं करावें लेकिन आप कर्मेन्द्रियों से कराओ। कभी भी मन-बुद्धि वा संस्कारों के वश होकर कोई भी कर्म नहीं करो।

16) जिस समय जिस सम्बन्ध की आवश्यकता हो, उसी सम्बन्ध से भगवान को अपना बना लो। दिल से कहो मेरा बाबा, और बाबा कहे मेरे बच्चे, इसी स्नेह के सागर में समा जाओ। यह स्नेह छत्रछाया का काम करता है, इसके अन्दर माया आ नहीं सकती।

(ब) सदा लवलीन स्थिति का अनुभव करो

17) सेवा में वा स्वयं की चढ़ती कला में सफलता का मुख्य आधार है – एक बाप से अटूट प्यार। बाप के सिवाए और कुछ दिखाई न दे। संकल्प में भी बाबा, बोल में भी बाबा, कर्म में भी बाप का साथ, ऐसी लवलीन स्थिति में रह एक शब्द भी बोलेंगे तो वह स्नेह के बोल दूसरी आत्मा को भी स्नेह में बाँध देंगे। ऐसी लवलीन आत्मा का एक बाबा शब्द ही जादू मंत्र का काम करेगा।

18) किसी भी बात के विस्तार में न जाकर, विस्तार को बिन्दी लगाए बिन्दी में समा दो, बिन्दी बन जाओ, बिन्दी लगा दो, बिन्दी में समा जाओ तो सारा विस्तार, सारी जाल सेकण्ड में समा जायेगी और समय बच जायेगा, मेहनत से छूट जायेंगे। बिन्दी बन बिन्दी में लवलीन हो जायेंगे। कोई भी कार्य करते बाप की याद में लवलीन रहो।

19) लवलीन स्थिति वाली समान आत्मायें सदा के योगी हैं। योग लगाने वाले नहीं लेकिन हैं ही लवलीन। अलग ही नहीं हैं तो याद क्या करेंगे! स्वत: याद है ही। जहाँ साथ होता है तो याद स्वत: रहती है। तो समान आत्माओं की स्टेज साथ रहने की है, समाये हुए रहने की है।

20) जब मन ही बाप का है तो फिर मन कैसे लगायें! प्यार कैसे करें! यह प्रश्न ही नहीं उठ सकता क्योंकि सदा लवलीन रहते हैं, प्यार स्वरुप, मास्टर प्यार के सागर बन गये, तो प्यार करना नहीं पड़ता, प्यार का स्वरुप हो गये। जितना-जितना ज्ञान सूर्य की किरणें वा प्रकाश बढ़ता है, उतना ही ज्यादा प्यार की लहरें उछलती हैं।

21) परमात्म प्यार इस श्रेष्ठ ब्राह्मण जन्म का आधार है। कहते भी हैं प्यार है तो जहान है, जान है। प्यार नहीं तो बेजान, बेजहान है। प्यार मिला अर्थात् जहान मिला। दुनिया एक बूँद की प्यासी है और आप बच्चों का यह प्रभु प्यार प्रापर्टी है। इसी प्रभु प्यार से पलते हो अर्थात् ब्राह्मण जीवन में आगे बढ़ते हो। तो सदा प्यार के सागर में लवलीन रहो।

22) कर्म में, वाणी में, सम्पर्क व सम्बन्ध में लव और स्मृति व स्थिति में लवलीन रहना है, जो जितना लवली होगा, वह उतना ही लवलीन रह सकता है। इस लवलीन स्थिति को मनुष्यात्माओं ने लीन की अवस्था कह दिया है। बाप में लव खत्म करके सिर्फ लीन शब्द को पकड़ लिया है। आप बच्चे बाप के लव में लवलीन रहेंगे तो औरों को भी सहज आप-समान व बाप-समान बना सकेंगे।

23) मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज पर स्थित रह भिन्न-भिन्न प्रकार की क्यू से निकल, बाप के साथ सदा मिलन मनाने की लगन में अपने समय को लगाओ और लवलीन स्थिति में रहो तो और सब बातें सहज समाप्त हो जायेंगी, फिर आपके सामने आपकी प्रजा और भक्तों की क्यू लगेगी।

24) आप गोप-गोपियों के चरित्र गाये हुए हैं - बाप से सर्व-सम्बन्धों का सुख लेना और मग्न रहना अथवा सर्व-सम्बन्धों के लव में लवलीन रहना। जब कोई अति स्नेह से मिलते हैं तो उस समय स्नेह के मिलन के यही शब्द होते कि एक दूसरे में समा गये या दोनों मिलकर एक हो गये। तो बाप के स्नेह में समा गये अर्थात् बाप का स्वरूप हो गये।

25) एक तरफ बेहद का वैराग्य हो, दूसरी तरफ बाप के समान बाप के लव में लवलीन रहो, एक सेकेण्ड और एक संकल्प भी

इस लवलीन अवस्था से नीचे नहीं आओ। ऐसे लवलीन बच्चों का संगठन ही बाप को प्रत्यक्ष करेगा।

26) जो सदा बाप की याद में लवलीन अर्थात् समाये हुए हैं। ऐसी आत्माओं के नैनों में और मुख के हर बोल में बाप समाया हुआ होने के कारण शक्ति-स्वरुप के बजाय सर्व शक्तिवान् नज़र आयेगा। जैसे आदि स्थापना में ब्रह्मा रूप में सदैव श्रीकृष्ण दिखाई देता था, ऐसे आप बच्चों द्वारा सर्वशक्तिवान् दिखाई दे।

27) जो सदा बाप की याद में लवलीन रह मैं-पन की त्याग-वृत्ति में रहते हैं, उन्हों से ही बाप दिखाई देता है। आप बच्चे नॉलेज के आधार से बाप की याद में समा जाते हो तो यह समाना ही लवलीन स्थिति है, जब लव में लीन हो जाते हो अर्थात् लगन में मगन हो जाते हो तब बाप के समान बन जाते हो।

28) जैसे कोई सागर में समा जाए तो उस समय सिवाय सागर के और कुछ नज़र नहीं आयेगा। तो बाप अर्थात् सर्वगुणों के सागर में समा जाना, इसको कहा जाता है लवलीन स्थिति। तो बाप में नहीं समाना है, लेकिन बाप की याद में, स्नेह में समा जाना है।

29) जो नम्बरवन परवाने हैं उनको स्वयं का अर्थात् इस देह-भान का, दिन-रात का, भूख और प्यास का, अपने सुख के साधनों का, आराम का, किसी भी बात का आधार नहीं। वे सब प्रकार की देह की स्मृति से खोये हुए अर्थात् निरन्तर शमा के लव में लवलीन रहते हैं। जैसे शमा ज्योति-स्वरूप है, लाइट माइट रूप है, वैसे शमा के समान स्वयं भी लाइट-माइट रुप बन जाते हैं।

30) सेवा में सफलता का मुख्य साधन है – त्याग और तपस्या। ऐसे त्यागी और तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लगन में लवलीन, प्रेम के सागर में समाए हुए, ज्ञान, आनन्द, सुख, शान्ति के सागर में समाये हुए को ही कहेंगे – तपस्वी। ऐसे त्याग तपस्या वाले ही सच्चे सेवाधारी हैं।

31) जैसे लौकिक रीति से कोई किसके स्नेह में लवलीन होता है तो चेहरे से, नयनों से, वाणी से अनुभव होता है कि यह लवलीन है, आशिक है, ऐसे जिस समय स्टेज पर आते हो तो जितना अपने अन्दर बाप का स्नेह इमर्ज होगा उतना स्नेह का बाण औरों को भी स्नेह में घायल कर देगा।

दादी जानकी जी द्वारा मिली हुई अनमोल सौगात
(विशेष प्रथम स्मृति दिवस)

1) नियम बड़े बलवान हैं। भगवान के साथ-साथ नियम का बल हम सबको बन्धनमुक्त बना रहा है। हम बंधनमुक्त, जीवनमुक्त का सुख पाने वाली आत्मा हैं। अपने आपसे पूछो कि जीवनमुक्त बना हूँ? कार्य व्यवहार में आते मुक्त हूँ? कोई भी बंधन अपनी ओर खींचता तो नहीं है?

2) शान्ति के सागर बाबा से हम सबने शान्ति में रहने की इतनी शक्ति पाई है जो मैं आत्मा कभी दु:खी, अशान्त हो नहीं सकती। क्या अभी तक दु:ख अशान्ति महसूस होती है? अगर हम थोड़ा भी परेशान होते या मेरे से कोई पेरशान होता तो मैंने बाबा से क्या पाया?

3) जो कुछ हमसे हुआ है क्या सच्ची दिल से हमने बाबा को नहीं सुनाया है? कोई भी बात दिल को खाती तो नहीं है? पुरुषार्थ में सफलता का अनुभव होता है?

4) जिन्होंने शुरू से यज्ञ में सेवायें की हैं, तन-मन-धन सेवा में लगाया है, उनका सफल हुआ ही पड़ा है। यह यज्ञ ऐसा है जिससे अनेकों का कल्याण हुआ है। हमारे पुरुषार्थ में ऐसा कुछ न हो, जो कॉन्सेस गिल्टी महसूस करे। तो चेक करना है कि कभी कान्सेस खाती तो नहीं है?

5) हमारे चित्त में क्या है और चिंतन में क्या है? सत्कार देने की भावना, स्वीकार करने की भावना हमारे में कहाँ तक आई है? बाबा बोले और बच्चा हाँ जी करे। जबसे बाबा के बने हैं तबसे मेरा रिकार्ड सदाकाल कैसा रहा? काम चलाऊ तो नहीं है? अपने से भी कई ठगी करते हैं, भगवान से तो करते ही हैं अपने से भी करते हैं। ऊपर से दिखाना कुछ और, करना कुछ और, यह कितनी ठगी है। चोरी ठगी जैसे संस्कारों में भरी पड़ी है। यह सूक्ष्म पाप है।

6) हमारे अन्दर जितनी सच्चाई उतना सबके प्रति स्नेह हो तो सब कार्य अपने आप सहज हो जाते हैं।

7) अगर कोई गलत कार्य हो रहा है, मैं समझती भी हूँ कि यह बात ठीक नहीं है फिर भी स्नेह दूंगी क्योंकि स्नेह देने से समीप आयेंगे तो सुधर जायेंगे। स्नेह नहीं दूंगी तो और ही बिगड़ जायेंगे।

8) अगर कोई बात अच्छी नहीं हो रही है तो भी हम अधैर्य न हों। अगर अधैर्य होकर स्नेह देने में कमी की तो बात खराब हो सकती है। हम स्नेह नहीं देंगे तो वह अनेकों को बिगाड़ेंगे। फिर हमारी भी नुक्स निकालते रहेंगे। एक से भी मित्रता भाव नहीं रखा तो अनेकों को शत्रु बनाया। छोटे बड़े हर एक को इज्जत चाहिए। बाहर में भी ऐसा जमाना है, मजदूर भी इज्जत चाहते हैं। उनका भी हमें मित्र बनकर रहना है।

9) जैसे हमारे बाबा ने सबको सम्भाल करके रखा, बाबा ने कोई को नहीं कहा होगा कि तुम यज्ञ से चले जाओ। कोई गया है तो अपने कारण से गया है। हमें बाबा की श्रीमत अनुसार चलना है। किसी का अशुद्ध व्यवहार देखकर मेरे चेहरे पर कुछ आया तो वायुमण्डल खराब हो जायेगा।

10) जहाँ मेरी हाज़िरी हो वहाँ वायुमण्डल शुद्ध, शान्त, प्रेममय हो जाए। अनेकों की हाज़िरी का इतना महत्व नहीं है, जितना एक निमित्त आत्मा की हाज़िरी सेवा करती है। हमारे अन्दर मतभेद देखा तो बाबा का नाम बाला नहीं होगा। कोई कुछ भी कर रहा है, मुझे उसको सत्कार देना है। स्नेह देना है, इससे ही वायुमण्डल शक्तिशाली बनेगा।

11) बाबा के जो नये-नये बच्चे हैं, वह स्नेह के कारण सहयोगी बने हैं। अगर निमित्त बने हुए का आवाज ठीक नहीं है, सत्कार, सम्मान नहीं देते तो वह बिचारे टूट जाते हैं। कहाँ से भी थोड़ा सा अपमान हुआ तो दिल टूटी। उसको बाबा से दूर करने के निमित्त बनें इसलिए हम किसी का भी अपमान करने के निमित्त न बनें।

12) यह हमारी संस्था नहीं है, हमारा परिवार है। हम किसी भी व्यर्थ बातों में न अटकें, न किसी को अटकने दें। किसी को भी झरमुई-झगमुई करने की ताकत कैसे आई! ऐसी हमारी अन्दर की स्थिति हो, बाबा से प्यार हो। हम सबके बीच में बाबा है।

13) बड़ों की दया दृष्टि दुआ हो, ईश्वरीय परिवार में सब हमसे खुश हों, मेरा कोई ऐसा संस्कार न हो जो कोई बाबा से दूर हो जाए। हम बाबा के ऐसे मुरब्बी बच्चे बनकर रहें जिस पर भगवान की भी हुज्जत हो। और सब बातें भूल जायें, कोई की भी बात मन चित्त में न हो। अगर मैंने कोई की बात को खराब कहा, तो 10 कहने लग पड़ेंगे। निमित्त मैं बनी। बाबा मम्मा ने हम बच्चों की कमियों को ढका है, छिपाया है, फैलाया नहीं। ऐसी हमारे दिल में भी सबके प्रति सच्चाई, स्नेह और शुभ भावना हो।

14) आजकल कई आत्मायें परवश हैं, अचानक कईयों में प्रवेशता हो जाती है। हमको कितना दयावान बनना है। किसी के भी दोषों को, कमियों को हम नहीं देख सकते। बिचारा परवश है ना। कोई किसी के संग में आ जाते हैं, अपनी असलियत को भूल जाते हैं। हमें उनके प्रति भी दयावान बनना है। अपने को भी बिल्कुल सेफ रखना है, दूसरों को भी छुड़ाते जाना है।

15) कोई कितना भी अच्छा हो पर हमारी आंख कहीं किसी में भी न डूबे। यज्ञ की हड्डी सेवा करो तो हड्डी सुख मिलेगा, हड्डियां मजबूत हो जायेंगी। हड्डी सेवा से ही हमारी ब्राह्मण लाइफ बनी है, इस सेवा ने ही माया से छुड़ाया है।

16) जो यज्ञ सेवा में नाज़ुकपना दिखाता है या यज्ञ में किसी के भी दोष देखता है तो उसको किसी की समीपता के सुख का अनुभव नहीं हो सकता है। किसी की ग्लानी की माना यज्ञ की इज्जत गई, तो हम यह काम नहीं कर सकते हैं। अच्छा।

"बाबा के प्यार और पालना का रिटर्न दो - टर्न होकर दिखाओ"

(दादी गुल्जार जी का क्लास -रिवाइज)

हमारी तरफ से नयी दुनिया के नम्बरवन जन्म की, नम्बर वन तारीख की और नम्बरवन राज्य की मुबारक हो, मुबारक हो। देखो, बाबा का कितना आप भाईयों के ग्रुप से प्यार है जो बाबा ने स्पेशल जन्माष्टमी की सेवा के टाइम पर आप सबको बुलाया है। बाबा के प्यार का अभी हम सबको मिलकर रिटर्न देना है। जिससे प्यार होता है उसका जो भी संकल्प, बोल, कर्म होता है वो प्यारा भी लगता है और उस जैसा बनने का लक्ष्य भी रहता है। हम सबका तो बाबा से 100 प्रतिशत से ज्यादा प्यार है ना। बाबा कहता है मुझे और कुछ रिटर्न नहीं चाहिए। सिर्फ आप टर्न हो जाओ, यही रिटर्न चाहिए। तो बोलो, इस भट्ठी में आकर समय प्रमाण अभी दृढ़ संकल्प किया है कि अभी मुझे परिवर्तन करना ही है? दूसरे को थोड़ा-थोड़ा देखेंगे? (नहीं जी) क्योंकि दूसरों

को देखने से अलबेलापन भी आ जाता है। कभी सोचते हैं कि महारथी भी ऐसे हैं, कोई सम्पन्न नहीं हुआ है, कमी है तो मेरे में भी थोड़ी कमी रह गयी, तो यह है अलबेलापन। वो पुरुषार्थ कर रहे हैं अपनी कमी छोड़ने की और हम उसकी कमी को देखकर, अपने अन्दर रखकर फालो करके अलबेले बनें तो नुकसान किसको। आजकल तो बाबा हमको स्लोगन भी याद करा रहा है - न दु:ख दो न दु:ख लो। अगर कोई भाई या बहन, निमित्त टीचर भी कुछ कह देती है तो बाबा प्रश्न पूछता है, चलो उसने आपको दु:ख दिया, तो लेने वाला कौन? देने वाला अलग होता है, लेने वाला अलग होता। उसने दिया, उसका कर्म बापदादा जाने। लेकिन हम लेते क्यों हैं! आपको कोई खराब चीज़ देते हैं तो उसे फेक देंगे ना। बाबा कहते आधा स्लोगन याद नहीं करो कि मैं किसी को दु:ख नहीं देता हूँ, मैं तो सभी से बहुत अच्छा चलता हूँ, लेकिन दूसरे मेरे को डिस्टर्ब करते हैं, तंग करते हैं। वास्तव में अगर उसने दु:ख दिया भी तो जिम्मेवार मैं हूँ कि दु:ख लूँ या नहीं लूँ। मन में कभी भी अगर कोई दु:ख देता है तो लेना नहीं है यानी दिन में फील नहीं करना है। अगर फील किया, तो मन में फीलिंग आ गयी, तो जब भी वो सामने आयेगा तो उसके प्रति कभी भी शुभ भावना, शुभ कामना होगी ही नहीं। कोई न कोई ग्लानि ही आयेगी या ईष्या आयेगी या घृणा आयेगी।

अगर किसी ने कुछ कह दिया तो भविष्य के लिए उससे शिक्षा लेकर अपने को ठीक रखूं। बाबा तो कहते ही हैं कि निन्दा हमारी जो करे मित्र हमारा सोय। आप सबने यज्ञ की कहानी सुनी होगी कि कलकत्ते में एक विश्वामित्र अखबार निकलती है, उसमें बाबा की जीवन कहानी में लिख दिया कि दादा साइकल रिपेयर का काम करता था। जब निर्मलशान्ता दादी ने पढ़ा तो उसको जोश आ गया कि मैं इस पर केस करूँगी। तो उसने बाबा को पत्र लिखा कि ऐसे अखबार में निकला है। तो बाबा ने यही कहा कि बाबा सब बच्चों का बाप है, अभी बाप कैसे छुट्टी देगा कि मेरे बच्चे पर केस करो। मैं तो सबका पिता हूँ तो कैसे मैं छुट्टी दूंगा। आप यही सोचो कि निन्दा हमारी जो करे मित्र हमारा सो। यही मित्र बनके आपकी प्रजा में आयेगा। तो फालो फादर करना है। जैसे बाबा ने उसको शुभ भावना और शुभकामना की तरफ अटेन्शन दिलाया। ना कि उसने उल्टा किया तो मैं भी उसके साथ उल्टा करूँ। अगर मैं उल्टा करूंगा तो उसका फल क्या होगा! तो हम फिर फालो करते हैं उल्टा करने वाले को, यह फिर कौन सा ज्ञान है। बाबा कहता है, सबके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखो। यह हो सकता है कि कोई के संस्कार बहुत कड़े होते हैं, और हम शुभ कामना रखने की कोशिश भी करते हैं लेकिन वो नहीं बदलता है, कभी-कभी थोड़ा टाइम भी लगता है। फिर हम समझते हैं कि हमने शुभ भावना रखी तो लेकिन यह बदलने वाला ही नहीं है, शुभ कामना के लायक ही नहीं है। अभी मैंने सर्टीफिकेट क्यों दे दिया, मैं भाग्य विधाता हूँ क्या! हम लोग जब बाबा के पास आये तो हमारे में क्या नहीं था। सभी विकार थे ना तो भी बाबा ने हमारी बुराईयाँ देखी? बाबा ने हमको कहा कि बच्चे तुम भाग्यवान आत्मा हो। मेरे बच्चे हो, भगवान के बच्चे हो। यही उमंग, हिम्मत और उत्साह दिलाया तो हमारी कमजोरी कम हो गयी।

आप सब बहुत सेवाधारी हो, प्यार से सेन्टर पर रहकर सेवा कर रहे हो। आप सब भाई या बहनें जो भी सेन्टर पर रहते हैं, बाबा कहते हैं हमेशा समझो हम सेन्टर पर नहीं रह रहे हैं, सृष्टि ड्रामा की स्टेज पर हीरो पार्ट बजा रहे हैं, तो हर बात में, हर कर्म में जितना अटेन्शन होना चाहिए, उतना है? कभी भी यह नहीं समझो कि हम छोटे सेन्टर पर हैं, हमें कौन देखता है। यही याद रखना हम हीरो एक्टर हैं, सारे वर्ल्ड की नज़र हमारे ऊपर है। हम हीरो हैं, जीरो से लगन है, किसी भी बात को जीरो लगानी है। तीन बिन्दियों का तिलक अपने मस्तक पर तो क्या लेकिन अपने मन में, बुद्धि में यही स्मृति का तिलक लगाना है।

किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिए दो शक्तियों की आवश्यकता है - एक है सहन करने की शक्ति, दूसरा समाने की शक्ति। अगर हम अभी से सहन शक्ति और समाने की शक्ति अपने में भरपूर करें तो कुछ भी होगा तो हमारी सहन शक्ति के आगे पहाड़ भी रुई बन सकता है। सिर्फ अपने में चेक करें कि सहन शक्ति जिस समय हमको चाहिए उस समय सहन शक्ति इमर्ज होती है? सर्वशक्तिमान की स्टेज पर बैठकर, हर सीन अन्तिम देखें और सहन शक्ति को आर्डर करें और वो हाजिर हो। ऐसी प्रैक्टिस अभी से अगर हमारी होगी तो सहन शक्ति और समाने की शक्ति से हम उसी लगन में मगन होंगे और पहाड़ भी हमारे आगे रुई बन जायेगा।

प्रश्न:- निर्विघ्न विजयी स्थिति सदा कैसे रहे?

उत्तर:- सदा विजयी रहने के लिए पहले अपने को सदा मैं आत्मा मालिक हूँ, इस शरीर की कर्मेन्द्रियाँ, कर्मचारी हैं, मैं कर्मचारियों द्वारा कर्म कराने वाली डायरेक्टर हूँ या मालिक हूँ -

ये नशा और निश्चय, हर कर्म करने के पहले चेक करना चाहिए। कोई भी कर्म शुरू करते हैं तो आदि में भी देखें कि मैं मालिकपन की सीट पर हूँ, तो मन हमारा मानेगा, बुद्धि मानेगी, अगर मैं मालिक ही नहीं हूँ तो मन क्यों मानेगा, फिर तो मन हमको मनवायेगा क्योंकि गुलाम मालिक हो जायेगा और मालिक गुलाम हो जायेगा। तो पहले चेक करो फिर बीच में चेक करो फिर अन्त में रिजल्ट निकालो कि काम में भले कितना समय बिजी रही, लेकिन मेरी स्थिति मालिकपन की रही या नहीं रही? अगर थोड़ी कम रही तो अगला कर्म जब हम शुरू करते हैं, उस आरम्भ में थोड़ा और पावर भरके, स्मृति से समर्थी लाकर काम शुरू करो। उसमें भी आदि मध्य अन्त चेकिंग करो और चेंज करो तो फिर बहुत सहज हो जायेगा। मैं मालिक हूँ तो यह स्मृति रहनी चाहिए।

प्रश्नः- आत्म-अभिमानी स्थिति सहज और निरन्तर कैसे रहे?

उत्तरः- मालिकपन याद रखो। बाबा ने एक पूरी डायरी में लिखा मैं आत्मा हूँ। मालिकपन की स्मृति हमेशा रखो। आत्म-अभिमानी स्थिति के लिए मैं करावनहार होके कर्मेन्द्रियों से कराता हूँ, मालिकपन की स्मृति आत्म-अभिमानी स्थिति ऑटोमेटिकली बनायेगी और बीच-बीच में चेकिंग करो कि मैं मालिक हूँ या मन मालिक हो गया है। इससे एक तो नशा भी रहेगा और खुशी भी रहेगी, मालिकपन में हिम्मत भी आती है, तो आत्म-अभिमानी बनना मुश्किल नहीं है।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

एकरस स्थिति बनाना - यह बहुत ऊंची साधना है

1) एकरस स्थिति बनाने के लिए देखते हुए भी न देखो - यह अच्छी साधना है। कोई कहते देखते हुए भी न देखें फिर भी दिखाई पड़ता है। जिसे घर की याद होगी, उपराम वृत्ति होगी - वह देखते हुए भी नहीं देखेंगे। जिसके अन्दर पुरानी दुनिया से संन्यास की वृत्ति होगी, जो अन्दर से चेकिंग करते मेरा कहीं लगाव झुकाव तो नहीं है, वह भी देखते हुए नहीं देखेंगे। किसी के तरफ रग जाना ही नुकसान है। बगुले के तरफ रग है तो वह खींचकर अपने समान बनायेगा। यदि दिखाई पड़ता है – यह हंस है और रग गई तो भी फरिश्ता नहीं बन सकते।

2) जब तक रीयल रुहानियत की खुशबू नहीं आई है तब तक एकरस स्थिति नहीं बन सकती। रुहानियत का रस सुख शान्ति देने वाला रस है। रग है तो खुद भी उस रस में नहीं रह सकता है, जहां रग जाती है उसकी खींच होगी, बाबा से रुहानी रस खींच नहीं सकता। जैसे बहुत सूक्ष्म माँ के गर्भ में नाभी से बच्चे को खाना मिलता है। इतना सूक्ष्म सम्बन्ध जितना मात-पिता से है, उतना मात-पिता की सूक्ष्म शक्ति उसे जन्म देने वा पालना देने में मदद करती है। जिन्हें वह रस मिला है उनकी कहाँ रग नहीं जा सकती। यह रस अनुभव किये बिना ईश्वरीय सन्तान का नशा नहीं चढ़ेगा।

3) बाबा का बच्चा बनते ही अपनी स्थिति पर ध्यान हो। हमारी स्थिति कोई हिला नहीं सकता, नीचे ऊपर नहीं कर सकता। कितने भी विघ्न आयें, एक बल एक भरोसे के आधार पर स्थिति बहुत अच्छी बनती है। जिस आधार से स्थिति अच्छी बनती है वो लिस्ट अपने पास रखनी चाहिए। अगर मुझे एकरस स्थिति बनानी हैं तो किस-किस बात की लिस्ट बनाऊं? पहले अन्तर्मुख रहूँ। बाह्यमुखता घड़ी-घड़ी खींचे नहीं फिर एकाग्रचित रहने के आदती बनते जायेंगे।

4) एकाग्रचित्त बनने के लिए समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति, सहनशक्ति चाहिए। कोई भी शक्ति की कमी है तो एकाग्रचित नहीं बन सकते। सहनशक्ति की कमी एकाग्रचित्त बनने नहीं देती। विस्तार से बोलने वाला, विस्तार से सोचने वाला एकाग्रचित नहीं बन सकता। समाने की शक्ति ऐसी हो जो बीती को बीती कर दे। पास्ट को पास्ट कर दे, फुलस्टाप लगा दे। एकाग्र होकर बाबा को याद करना शुरू कर दे। कुछ भी हो रहा है - रिंचक मात्र भी हलचल न हो। क्या हुआ, कैसे हुआ, क्यों हुआ, यह न हो।

5) जब तक फुलस्टॉप देने की आदत नहीं है तब तक एकाग्रचित्त नहीं बन सकते। एकाग्रचित्त नहीं तो एकरस स्थिति दूर हो जाती

है। एकाग्रचित्त रहने वाला बाबा से गुप्त शक्ति ले सकता है। फिर ऐसे फील होगा कि यह शक्ति आत्मा को चला रही है। फालतू बातों में समय गंवाना छोड़ दो। बाबा से लिंक जुटी हुई हो तो आनन्दमय स्थिति बन सकती है। एकरस स्थिति बनाना माना आनन्दमय स्थिति को पाना उस आनन्द में सुख शान्ति प्रेम सब समाया हुआ है। अलग नहीं है।

6) आनन्दमय स्थिति में सुख शान्ति प्रेम सब समाया हुआ है। आनन्दमय स्थिति मात-पिता के समान बनने में मदद करती है। तो सब बातों को छोड़ पिता को फालो करो। जो एक बाबा को देखता है उसे और कुछ दिखाई नहीं पड़ता। जो बाबा को फॉलो करता है उसके हर कदम में कल्याण है। हम कितने भाग्यशाली हैं जो कल्याणकारी बाबा के कदमों पर कदम हैं। देवताओं के कदमों में पदम इसीलिए दिखाये जाते हैं क्योंकि उन्होंने हर कदम पर फालो फादर किया है।

7) बाबा ने हम बच्चों को याद दिलाया है - बच्चे यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है, तुम देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूलो। बाबा ने हमें यज्ञ सेवाधारी बनाया तो हम ब्राह्मण बनें। ब्राह्मण न बने तो देवता नहीं बन सकते। बाबा ने गोद में लिया, यज्ञ रचा सेवा कराने के लिए। बाबा का बच्चा बनने से, सेवाधारी बनने से ब्राह्मण बन गये।

8) जैसे शिवबाबा का नाम गुणवाचक है, ऐसे हमारे गुण कर्तव्य पर नाम मिला ब्राह्मण। हमारा बाप वृक्षपति है, कल्याणकारी है, जिसे यह याद है, उसके ऊपर ग्रहचारी आ नहीं सकती। ग्रहचारी किस पर आती है? धन, सम्बन्ध और शरीर, इन तीनों पर गृहचारी आ नहीं सकती। जब वृक्षपति बाप के बच्चे बने तो शरीर की ग्रहचारी भी चली गई, सम्बन्ध में सुख है, झगड़ा हो नहीं सकता। सम्पत्ति में भी किसके सामने हाथ नहीं फैला सकते।

9) हम दाता के बच्चे हैं, हमारे ऊपर ब्रहस्पति की दशा है। वृक्षपति बाप के बच्चों को सुख देखना है जरूर। मैं वृक्षपति बाप का बेटा हूँ – यह वरदान सदा याद रहे। अगर ब्रह्मा मुखवंशावली हूँ तो सबकी जन्मपत्री वाचने, देखने वाला हूँ। सफलता का सितारा हूँ – हमारे ऊपर ग्रहचारी आ नहीं सकती। अगर आती है तो हटा देनी चाहिए। हट सकती है। जो अच्छे ऊंचे ब्राह्मण हैं वो औरों की भी ग्रहचारी हटा देते हैं। नीच ब्राह्मण जादू मंत्र डालने वाले होते हैं। वो हैं जैलसी वाले ब्राह्मण। किसी को सुखी देख सहन नहीं कर सकते। कोई ऐसे भी हैं जो एक दो से कॉम्पीटीशन करते रहे, भेंट करना, क्रिटिसाइज़ करना – यह ऊंचे ब्राह्मणों को धंधा नहीं है। उनकी एकरस स्थिति बन नहीं सकती। उन्हें अन्दर से सबकी दुआयें मिल नहीं सकती।

10) अगर हमारी स्थिति अच्छी है तो सबकी दुआयें मिलेंगी। वो किसी को भी न देख एक ईश्वर को देखेगा। न पुरानी दुनिया को देखेगा, न यहाँ किसी को देखेगा। क्या हो रहा है, कैसे हो रहा है, हमको क्या करना है। क्या मुझे चेकिंग करने की ड्यूटी मिली हुई है। हरेक को ड्यूटी मिली है – अपने आपको सम्भालने की। जो अपने आपको नहीं सम्भालता उसे बाबा कोई ड्यूटी नहीं देता। मुझे कोई नहीं सम्भाले, नहीं तो बर्डन (बोझ) हो जायेगा। मैं कोई छोटी बेबी थोड़े ही हूँ, जो घड़ी-घड़ी हमें कोई सम्भालता रहे। हमारा ध्यान रखे। इतना छोटा तो नहीं बनना है।

11) मुख्य बात है अपनी स्थिति को अन्दर से मजबूत बनाना है। सयाना वह है जो अन्दर की लगन में मगन रहे। लगन को कम न करे। तो एकरस स्थित बनाने के लिए अन्तर्मुखी बनो। बीती बातों का ख्याल कर रोना नहीं है, अगर रोते हैं तो एकरस स्थिति नहीं हैं। स्थिति नीचे ऊपर तब होती है जब हमारी मर्जी से काम नहीं होता है। मेरी मर्जी कहाँ से आई!

12) हमारी सदा शुभ भावना शुभ कामना रहे। ड्रामा की नूँध है। हम कभी लड़ाई-झगड़ा कर नहीं सकते क्योंकि हमें अपकारियों पर उपकार करना है। मुख चलाना नहीं है। अगर मुंह बदल भी जाता है तो यह भी ठीक नहीं है। अब तक भी इस प्रकार के संस्कार हैं तो ठीक नहीं। इसके लिए जितना चेक करेंगे उतना अच्छा है।

13) चेक वह कर सकते हैं जो अन्तर्मुखी हैं, जिन्हें एकरस स्थिति बनाने का लक्ष्य है। किसी भी बात को न देख अपने को देखो। सी फादर, फालो फादर। जो बाबा को नहीं देखता उसे बाबा भी नहीं देखता। जो अपने को चेक करता है उसे फट से पता चलता है कि मेरे में क्या कमी है। जो अपनी कमी को स्वीकार करता है बाबा उसे इशारा देता है, किसी के द्वारा दे देगा या स्वप्न में दे देगा।

14) हमको कम्पलीट बनना है, बाबा को बनाना है, तो बाबा हमारे में कोई कमी रहने नहीं देगा। अगर मुझे अपने में कोई कमी नहीं रखनी है तो कमी का पता जरूर चलेगा। सम्पूर्ण देवता बनने वाले बच्चे इशारे से समझते हैं। जिसको एकरस स्थिति बनानी है वह ईशारे से समझ जायेंगे। विस्तार से बताने की जरूरत नहीं है। अच्छा।